वैदिक कालीन सामाजिक, राजनीतिक,आर्थिक एवं धार्मिक स्थिति

वैदिक समाज :
वैदिक सभ्यता में अनेक स्तर दो वर्गों में विभक्त थे—आर्य तथा अनार्य। इसमें पूर्णतः व्यावसायिक स्वतंत्रता थी, जैसा कि एक ऋषि का कहना है— "मेरा पिता वैद्य है, मेरी माता पीसने वाली (पिसनहारी) है, मैं कविता करता हूँ।" म्योर ने लिखा है कि ऋग्वेद काल में जाति प्रथा नहीं थी। आर्यों व दासों में वर्ण के आधार पर जाति प्रथा का उदय हुआ। वास्तव में यह वर्ण व्यवस्था न होकर वर्ग व्यवस्था थी, जिसमें: ब्राह्मण वर्ग: धार्मिक कृत्य, अध्यापन और दान-अर्पण के लिए। इसमें होता, पोतृ, नेष्टृ, प्रशास्तृ, अध्वर्यु, ब्रह्मा आदि सात पुरोधा इन्हीं में से होते थे।राजन्य (क्षत्रिय) वर्ग: यह द्वितीय वर्ग था, जिसका आविर्भाव राष्ट्रीय सुरक्षा और सैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हुआ। बाद में अनार्यों से रक्षा के लिए इस वर्ग का उदय हुआ।वैश्य समाज: ऋग्वेद के 10वें मण्डल में 'विश' शब्द भ्रमणशील आर्यों के लिए था। समाज की जीविका का निर्वाह, संग्रहण और वितरण वैश्य वर्ण पर अवलम्बित था।शूद्र वर्ण: सेवा कार्यों के लिए।

परिवार और समाज:
परिवार में पितृ-प्रधान सत्ता थी।बहु-पत्नी प्रथा केवल राजपरिवारों तक सीमित थी।पिता या पितामह ही कुटुम्ब का प्रधान होता था, वही पालन-पोषण का भार वहन करता था।प्रत्येक को चल सम्पत्ति का अधिकार था।पशु, अश्व, रथ, आभूषण, वस्त्र, दास आदि व्यक्तिगत सम्पत्ति माने जाते थे।विशेष तथ्य: 'अपाला' नामक कुमारी ने अपने पिता के उत्तराधिकारी सदृश अपनी उर्वर क्षेत्र की मांग की थी। इस काल में पुत्र की प्रधानता और सम्मिलित परिवार प्रथा प्रचलित थी, जहाँ सभी को सामूहिक उत्तरदायित्व वहन करना पड़ता था। हालाँकि कभी-कभी यह पारिवारिक कलह का कारण भी बनता था, लेकिन स्त्रियों को पर्याप्त स्वतंत्रता प्राप्त थी।

नारी की स्थिति: ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों को शिक्षा दी जाती थी और वे अत्यंत विदुषी होती थीं। उदाहरण के तौर पर, ऋग्वेद में विस्पला नामक एक स्त्री का उल्लेख मिलता है जो युद्ध में गई थीं और घायल होने पर अश्विनी कुमारों ने उनकी चिकित्सा की थी। विदुषी और वीर स्वभाव की नारियों को पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त थी। उस समय एक विवाह को ही आदर्श माना जाता था और वधुओं का समाज में बहुत सम्मान था।

वेशभूषा और श्रृंगार: उस समय वस्त्र मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते थे—नीवि (धोती), वास और अधिवास। ये वस्त्र ऊनी और सूती दोनों प्रकार के होते थे। आभूषणों का काफी प्रचलन था और धन-सम्पन्न व्यक्ति सोने के आभूषण पहनते थे। विशेष उत्सवों पर उज्ज्वल और सुंदर वस्त्र धारण करने की प्रथा थी। आभूषणों में कुण्डल, हार, अंगद, वलय और गजरे प्रमुख थे। ऐतिहासिक प्रमाणों में कंघी और तेल के उपयोग का भी उल्लेख मिलता है। पुरुष अक्सर बड़े बाल और दाढ़ी रखते थे, हालांकि कुछ लोग दाढ़ी-मूँछ मुँडवा भी देते थे।

खान-पान: भोजन में दूध, दही, घृत (घी), खीर और पनीर का प्रमुखता से सेवन किया जाता था। समाज में शाकाहार की प्रधानता थी। गाय को अत्यंत पवित्र और न मारने योग्य माना जाता था, जिसके लिए 'अघन्या' शब्द का प्रयोग किया गया है। उस समय का सबसे लोकप्रिय और मधुर पेय पदार्थ 'सोम' था, जिसकी बहुत प्रशंसा की गई है।

कला और मनोरंजन: ऋग्वेद में गायन और वादन का विशेष महत्व था। इसमें दुन्दुभि, बेणु और वीणा जैसे वाद्ययंत्रों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। संगीत को परमात्मा रूपी पुरुष से उत्पन्न माना गया है। उत्सवों के समय स्त्री और पुरुष दोनों ही विशेष वेशभूषा और आभूषणों से सुसज्जित होकर नृत्य करते थे। यजुर्वेद के अनुसार वंश नर्तिन शब्द का प्रयोग बांस के दंडों पर नृत्य करने वाले नटों के लिए किया गया है。
विज्ञान और तकनीकी ज्ञान: वैदिक काल में रसायनशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, गणित, आयुर्वेद, ज्योतिष और शरीर विज्ञान जैसे क्षेत्रों में काफी प्रगति हो चुकी थी। यज्ञों के लिए वेदी निर्माण में रेखागणित का उपयोग होता था और

यज्ञ के सही समय के निर्धारण के लिए ज्योतिष और नक्षत्र विद्या का प्रयोग किया जाता था। वेदों में सुंदर गीतों के साथ-साथ गद्य, नाटक और संवाद शैली का भी समावेश है।

शिक्षा पद्धति: वैदिक शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का सामाजिक और आध्यात्मिक अभ्युत्थान करना था। प्राचीन ऋषियों के अनुसार शिक्षा का ध्येय मनुष्य की अंतःशक्ति को पूर्ण रूप से विकसित करना था। विद्यार्थी ईश्वर से प्रार्थना करते थे कि उन्हें निष्पाप और शुद्ध बुद्धि प्राप्त हो जो उन्हें सन्मार्ग पर ले जाए। वैदिक शिक्षा मानवतावादी थी, जिसमें सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य जैसे मूल्यों पर बल दिया गया था। इसके साथ ही मन और कर्म की पवित्रता, संतोष, तप और स्वाध्याय को शिक्षा पद्धति का मूल आधार माना जाता था|

ऋग्वैदिक कालीन राजनीतिक व्यवस्था

अध्ययन के लिए समस्त शासन व्यवस्था को पाँच भागों में विभक्त किया गया है:

1. कुटुम्ब: यह राष्ट्र के शासन की सबसे छोटी इकाई थी। कुटुम्ब का वृद्ध व्यक्ति 'गृहपति' कहलाता था और वही प्रत्येक कौटुम्बिक समस्या का समाधान करता था। प्राचीन काल में प्रायः एक ही ग्राम के लोग एक ही कुटुम्ब के सदस्य होते थे।
2. ग्राम: जब कई कुटुम्ब एक ही स्थान पर रहने लगते थे, तो वे ग्राम कहलाते थे। उन सभी व्यक्तियों की सम्मिलित व्यवस्था के लिए 'ग्रामणी' अथवा 'व्रजपति' की नियुक्ति की जाती थी।
3. विश: यह एक प्रकार का वर्ग विशेष था, जिसका प्रधान 'विशपति' कहलाता था।
4. जन: कई विश मिलकर 'जन' बनते थे, जिसका प्रधान 'गोप' कहा जाता था।
5. राष्ट्र: राजा ही राष्ट्र की शासन व्यवस्था का सर्वेसर्वा होता था।

ऋग्वेद के अनुसार राजा प्रजा द्वारा चुना जाता था। ऐतरेय ब्राह्मण में देवासुर संग्राम में देवताओं की पराजय का मुख्य कारण राजा का न होना बताया गया है। जबकि तैत्तिरीय ब्राह्मण में युद्ध संचालन के लिए देवताओं ने मिलकर इंद्र को आहूत किया व उसे राजा बनने की प्रार्थना की। राजा ही न्याय करता था और वही दण्ड देता था। वह अपने शासन के लिए गुप्तचरों का भी उपयोग करता था। राजा प्रजापालक और दीनबंधु था, उसे जनता से उपहार भी मिलता था।

ऋग्वैदिक काल में ब्राह्मण श्रेष्ठ थे। राजन्य राजा के सहायक होते थे जो परवर्ती काल में क्षत्रिय कहे गए। राजा को मंत्रणा देने के लिए समितियाँ होती थीं। पुरोहित युद्ध व राज्य शासन में राजा का हाथ बँटाता था व धार्मिक कार्यों में भी सहायक था। पुरोहित अत्यंत संपन्न व्यक्ति होता था। युद्ध संचालन के लिए राजा स्वयं सेनाध्यक्ष या सेनानी की नियुक्ति करता था। ग्रामणी के सहायक 'उपस्ति' व 'इम्प' नामक पदाधिकारी होते थे। समाचार वाहक 'दूत' राजा के प्रियजन थे।

ऋग्वेद के मन्त्रों में सभा, समिति एवं विदथ जैसे शब्दों का उल्लेख मिलता है, जो कि प्रजा का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्थाएँ थीं। सभा और समिति के प्रधान पद का अधिकारी राजा ही होता था। ये संस्थाएँ निरंकुश होने पर कभी-कभी राजा पर प्रतिबन्ध भी लगाती थीं। इनके सदस्यों को 'सभ्य' कहा जाता था। समिति जनसाधारण या सर्वसाधारण की संस्था थी, जबकि सभा उच्च कुल के व्यक्तियों की संस्था थी। कीथ के अनुसार समिति के एकत्र होने का एक विशाल भवन था। सम्भवतः सभा समाज के चुने हुए कुछ व्यक्तियों की एक परिषद् थी। राजा प्रजापालक और दीनबंधु माना जाता था और उसे जनता से उपहार मिलते थे। राज्याभिषेक के समय राजा प्रतिज्ञा करता था कि वह प्रजा के हित के विरुद्ध कार्य नहीं करेगा, अन्यथा उसे पदच्युत (हटाया) भी किया जा सकता था।

न्याय और दण्ड व्यवस्था:

वैदिक काल में न्याय व्यवस्था काफी कठोर थी। चोरी (अस्त्र, वस्त्र और रत्नों की) मुख्य अपराधों में गिनी जाती थी। अपराध सिद्ध करने के लिए जल और अग्नि जैसी कठिन परीक्षाएँ ली जाती थीं और ऋग्वेद में मनुष्यों के लिए 'बन्दीगृह' (जेल) का भी उल्लेख मिलता है। राजा ही न्याय और दण्ड का मुख्य अधिकारी होता था।

प्रशासनिक सहायक और संस्थाएँ:

राजा की सहायता के लिए 'संग्रहीता' (कोषाध्यक्ष), 'भागदुघ' (अर्थमंत्री) और 'सूत' (रथसेना नायक) जैसे पदाधिकारी होते थे। 'पुरोहित' राजा का मुख्य सलाहकार होता था जो युद्ध और शासन दोनों में मदद करता था।

इसके अलावा, प्रजा का प्रतिनिधित्व करने वाली दो मुख्य संस्थाएँ थीं—'सभा' (उच्च कुल के लोगों की परिषद) और 'समिति' (जनसाधारण की संस्था)। ये संस्थाएँ राजा की निरंकुशता पर अंकुश लगाती थीं।
सैन्य व्यवस्था और हथियार:
युद्ध के समय राजा स्वयं सेना का नेतृत्व करता था। सेना में पैदल सैनिकों के साथ-साथ तीन-चार घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथों का उपयोग होता था। प्रमुख हथियारों में धनुष-बाण, कवच, हस्तघ्न (हाथ की रक्षा के लिए), तलवार, भाला और बरछी शामिल थे। युद्ध में विजय के लिए पुरोहित प्रार्थनाएँ भी करते थे।
वैदिक दर्शन:
वैदिक संस्कृति का मूल आधार 'ऋत' और 'सत्य' की भावना है। समस्त संसार प्राकृतिक शक्तियों के अधीन नियमानुसार चलायमान है, और इन नियमों में विषमता के अभाव को ही 'ऋत' कहा जाता है। यह मानव जीवन का मुख्य नैतिक तत्व है।

आर्थिक व्यवस्था
ऋग्वैदिक आर्यों के भौतिक जीवन का मुख्य आधार कृषि और पशुपालन था। आर्यों ने अपनी सफलता का श्रेय रथों, घोड़ों और काँसे से बने बेहतरीन हथियारों को दिया, हालांकि इनके पुरातात्विक सबूत बहुत कम मिलते हैं। ऋग्वेद में 'फाल' का उल्लेख मिलता है, जिसे 'लांगल' भी कहते हैं, और यह संभवतः लकड़ी से बना होता था। ऋग्वैदिक लोगों को कृषि का अच्छा ज्ञान था। ई.पू. 2300 के आसपास काकेशस क्षेत्र में स्पोक वाले पहिए की शुरुआत हुई थी और जब आर्य भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमी भाग में आए, तो उन्होंने राजस्थान की खेतड़ी खदानों से प्राप्त तांबे का इस्तेमाल किया। वे फसलों की कटाई, बुआई और दरांती (हसिया) के उपयोग से भली-भांति परिचित थे। वैदिक काल से जुड़े क्षेत्रों में रहने वाले पूर्व-आर्य लोगों को भी कृषि का ज्ञान था, जिसका प्रयोग वे चारा उत्पादन के लिए करते थे।
ऋग्वेद में गाय और बैल के इतने संदर्भ मिलते हैं कि ऋग्वैदिक आर्यों के जीवन को मुख्य रूप से पशुपालन पर आधारित माना जा सकता है। अधिकांश युद्ध गायों के लिए ही होते थे और ऋग्वेद में युद्ध के लिए 'गविष्टि' शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसका अर्थ 'गायों की खोज' है। गाय सबसे महत्वपूर्ण धन मानी जाती थी। पुजारियों को दिए जाने वाले उपहारों में अक्सर गाय और दासियाँ शामिल होती थीं, लेकिन भूमि दान में नहीं दी जाती थी। संभव है कि आर्यों ने खेती के लिए भूमि के टुकड़ों पर कब्जा किया हो, लेकिन निजी संपत्ति के रूप में भूमि की व्यवस्थित मान्यता उस समय नहीं थी।
ऋग्वेद में विभिन्न कारीगरों जैसे बढ़ई, रथ निर्माता, बुनकर, चर्मकार और कुम्हार का उल्लेख मिलता है, जो यह दर्शाता है कि वे सभी शिल्पों से परिचित थे। तांबे या काँसे के लिए ऋग्वेद में 'अयस' शब्द का प्रयोग हुआ है, जिससे पता चलता है कि लोग धातु के कामकाज की जानकारी रखते थे। हालांकि, उस काल में नियमित व्यापार के अस्तित्व के पुख्ता प्रमाण नहीं मिलते हैं। ऋग्वैदिक काल में व्यापार मुख्यतः थल मार्गों से होता था।
ऋग्वेद में 'समुद्र' शब्द का उल्लेख मिलता है, जिसका अर्थ पानी के असीमित विस्तार से है. इसी प्रकार ऋग्वेद में 'पुर' शब्द का भी वर्णन है, जिसका अर्थ कोई इकाई या इकाई समूह है, जो संभवतः किसी किले या शहर के लिए प्रयुक्त होता था. कभी-कभी इस इकाई को हजारों दरवाजों वाला भी बताया गया है, हालांकि 'सहस्त्र' (हजार) शब्द का प्रयोग अक्सर अतिशयोक्ति के रूप में किया गया है. महत्वपूर्ण बात यह है कि आर्य शहरों में नहीं रहते थे; वे संभवतः मिट्टी से बने घरों में निवास करते थे. हालांकि इनके ठोस पुरातात्विक साक्ष्य नहीं मिले हैं, लेकिन वे पहाड़ियों और गुफाओं से भली-भांति परिचित थे।

धार्मिक व्यवस्था
प्रत्येक व्यक्ति धर्म को अपने वातावरण में खोजता है और ऋग्वैदिक आर्यों के लिए बारिश, सूर्य, चन्द्रमा, पहाड़ों और नदियों जैसी प्राकृतिक शक्तियों के अस्तित्व को समझना एक चुनौती थी। इसीलिए उन्होंने इन प्राकृतिक शक्तियों को ऐसे प्राणियों के रूप में देखा जिनमें पशुओं और मनुष्यों के गुणों के समान लक्षण थे। ऋग्वेद ऐसे ही देवताओं की स्तुतियों से भरा हुआ है, जिनकी रचना विभिन्न सम्मानित परिवारों के ऋषियों द्वारा की गई है। ऋग्वेद में इन्द्र सबसे महत्वपूर्ण देवता हैं, जिन्हें 'पुरन्दर' यानी दुर्गों को तोड़ने वाला कहा गया है। राक्षसों पर

विजय प्राप्त करने के लिए आर्य सैनिकों का नेतृत्व करने वाले इन्द्र को एक महान सेनानायक माना गया, जिनके सम्मान में ऋग्वेद के 250 सूक्त समर्पित हैं और उन्हें वर्षा का देवता भी माना जाता है।
अग्नि दूसरे सबसे महत्वपूर्ण देवता थे, जिन्हें लगभग 200 सूक्त समर्पित हैं। अग्नि ने आदिम लोगों के जीवन में खाना बनाने और जंगल जलाने जैसे कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत और ईरान दोनों ही संस्कृतियों में अग्नि की खोज का मुख्य स्थान है। माना जाता था कि अग्नि मनुष्यों और देवताओं के बीच मध्यस्थ का कार्य करती है, क्योंकि अग्नि में डाली गई आहुतियाँ धुएँ के रूप में आकाश में देवताओं तक पहुँचती थीं। वरुण का स्थान तीसरा था, जिन्हें जल का देवता माना जाता था और प्राकृतिक संतुलन (ऋत) बनाए रखने की जिम्मेदारी उन्हीं की थी।
ऋग्वेद में सोम को पौधों का देवता माना गया है, जिनके नाम पर एक मादक पेय पदार्थ का नाम रखा गया था। इसके बनाने की विधि का वर्णन ऋग्वेद के कई श्लोकों में मिलता है, हालांकि इसे अभी तक संतोषजनक रूप से पहचाना नहीं जा सका है। मरुत आँधी के देवता थे और सरस्वती एक अत्यंत महत्वपूर्ण नदी देवी थीं। इस प्रकार, ऋग्वैदिक देवता प्राकृतिक शक्तियों के विभिन्न रूपों के प्रतीक थे, जिन्हें मानवीय गतिविधियों के सापेक्ष पूजा जाता था।
अदिति और सविता ऋग्वेद काल की महत्वपूर्ण देवियाँ थीं, जिन्हें सुबह की उपस्थिति से संबंधित माना जाता था, लेकिन वे प्रमुख देवताओं की श्रेणी में नहीं आती थीं. पितृसत्तात्मक समाज होने के कारण देवताओं का महत्व देवियों से कहीं अधिक था. पूजा व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों पद्धतियों से की जाती थी, जिसमें प्रार्थनाओं और बलियों का विशेष स्थान था. वैदिक काल में प्रार्थनाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं; वास्तव में, हर एक जनजाति या कबीले के अपने विशेष देवता होते थे, जिनकी आराधना कबीले के सदस्यों द्वारा सामूहिक रूप से की जाती थी.
जब भी बलि दी जाती थी, तो अग्नि और इन्द्र को विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता था. जनजाति द्वारा देवताओं को बलिदान समर्पित किए जाते थे, लेकिन ऋग्वैदिक काल में यह किसी जटिल अनुष्ठान या सत्र के रूप में नहीं था. उस समय शब्दों की जादुई शक्ति को उतना महत्व नहीं दिया गया था जितना बाद के वैदिक काल में दिया जाने लगा. ऋग्वैदिक काल के लोगों ने देवताओं की पूजा आध्यात्मिक उत्थान या जीवन के दुखों की समाप्ति के लिए नहीं की थी. इसके विपरीत, उन्होंने मुख्य रूप से प्रजा, पशु, भोजन, धन और अच्छे स्वास्थ्य जैसी भौतिक वस्तुओं की कामना के लिए देवताओं को पूजा था।